2. समास

अभ्यास-कार्य

पृष्ठ संख्या–149

उत्तर–

3. 'समास-विग्रह' वह प्रक्रिया है, जिसमें किसी समस्तपद के दोनों पदों को अलग-अलग किया जाता है तथा समस्तपद बनाने से पहले जिन कारकीय-चिह्नों या अंशों का लोप कर दिया गया था, उन्हें पुनः दोनों पदों के साथ जोड़ दिया जाता है; जैसे– प्रेमाकुल – प्रेम **से** आकुल।

4. 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ 6. ✗ 7. ✓ 8. ✗

5.

	विग्रह	**समास का नाम**
1.	दाल और चावल	द्वंद्व समास
2.	घोड़े पर सवार	अधिकरण तत्पुरुष समास
3.	महान है जो वीर	कर्मधारय समास
4.	शक्ति के अनुसार	अव्ययीभाव समास
5.	चार राहों का समाहार	द्विगु समास
6.	सुंदर नयन हैं जिसके अर्थात विशेष स्त्री	बहुव्रीहि समास
7.	मरण तक	अव्ययीभाव समास
8.	सीता और गीता	द्वंद्व समास
9.	तुलसी द्वारा कृत	करण तत्पुरुष समास
10.	धन से हीन	अपादान तत्पुरुष समास
11.	यज्ञ के लिए शाला	संप्रदान तत्पुरुष समास
12.	आप पर बीती	अधिकरण तत्पुरुष समास
13.	देव का दास	संबंध तत्पुरुष समास
14.	दही में डूबा हुआ बड़ा	अधिकरण तत्पुरुष समास
15.	न न्याय	नञ् तत्पुरुष समास
16.	रेखा से अंकित	करण तत्पुरुष समास
17.	हवन के लिए सामग्री	संप्रदान तत्पुरुष समास
18.	जन्म से अंधा	अपादान तत्पुरुष समास
19.	दीनों का नाथ	संबंध तत्पुरुष समास
20.	कुल में श्रेष्ठ	अधिकरण तत्पुरुष समास

21. न सफल	नञ् तत्पुरुष समास
22. गुणों से युक्त	करण तत्पुरुष समास
23. सत्य के लिए आग्रह	संप्रदान तत्पुरुष समास
24. नेत्रों से हीन	अपादान तत्पुरुष समास
25. राजा का कुमार	संबंध तत्पुरुष समास
26. देश में अटन	अधिकरण तत्पुरुष समास
27. न पठित	नञ् तत्पुरुष समास
28. आराम के लिए कुरसी	संप्रदान तत्पुरुष समास
29. स्व द्वारा रचित	करण तत्पुरुष समास
30. गुण से हीन	अपादान तत्पुरुष समास
31. जीवन का साथी	संबंध तत्पुरुष समास
32. धर्म में वीर	अधिकरण तत्पुरुष समास
33. न धर्म	नञ् तत्पुरुष समास
34. माल के लिए गोदाम	संप्रदान तत्पुरुष समास
35. परम है जो आनंद	कर्मधारय समास
36. अमृत के समान वचन	कर्मधारय समास
37. चार मासों का समाहार	द्विगु समास
38. नियम के अनुसार	अव्ययीभाव समास
39. ऊँच और नीच	द्वंद्व समास
40. लंबा है उदर जिसका अर्थात गणेश	बहुव्रीहि समास
41. महान है जो वीर	कर्मधारय समास
42. संसार रूपी सागर	कर्मधारय समास
43. पाँच आबों (नदियों) का समूह	द्विगु समास
44. प्रत्येक वर्ष	अव्ययीभाव समास
45. नदी और नाले	द्वंद्व समास
46. चक्र को धारण किया है जिसने अर्थात विष्णु	बहुव्रीहि समास
47. वेद और पुराण	द्वंद्व समास
48. मृत्यु को जीत लिया है जिसने अर्थात शिव	बहुव्रीहि समास
49. रूप के अनुसार	अव्ययीभाव समास
50. तीन वेणियों (नदियों) का समाहार	द्विगु समास
51. सिंह के समान नर है जो अर्थात विष्णु	बहुव्रीहि समास
52. बुरी है जो आत्मा	कर्मधारय समास

53. पाँच तंत्रों का समाहार	द्विगु समास
54. प्रत्येक घर	अव्ययीभाव समास
55. देश और विदेश	द्वंद्व समास
56. पंक में जन्म लिया है जिसने अर्थात कमल	बहुव्रीहि समास
57. न होनी	नञ् तत्पुरुष समास
58. हाथों के लिए कड़ी	संप्रदान तत्पुरुष समास
59. माता और पिता	द्वंद्व समास
60. दिन और रात	द्वंद्व समास
61. ऋण से मुक्त	अपादान तत्पुरुष समास
62. नीला है जो मणि	कर्मधारय समास
63. पीला है अंबर जिसका अर्थात् विष्णु	बहुव्रीहि समास
64. हाथी और घोड़े	द्वंद्व समास
65. भारत का वासी	संबंध तत्पुरुष समास
66. महान है जो पुरुष	कर्मधारय समास
67. चंद्र के समान खिलौना	कर्मधारय समास
68. महान है जो आत्मा	कर्मधारय समास
69. दहेज की प्रथा	संबंध तत्पुरुष समास
70. चंद्रमा के समान मुख	कर्मधारय समास
71. पुष्पों की माला	संप्रदान तत्पुरुष समास
72. पाठ के लिए शाला	संप्रदान तत्पुरुष समास
73. अरुण के समान कमल	कर्मधारय समास
74. सु (अच्छा) है जो पुत्र	कर्मधारय समास
75. मानव का धर्म	संबंध तत्पुरुष समास
76. नव (नई) है जो निधि	कर्मधारय समास
77. उचित समय	अव्ययीभाव समास
78. जन (लोग) में शांति	अधिकरण तत्पुरुष समास
79. पुरस्कृत है जो फिल्म	कर्मधारय समास
80. यथा अर्थ अर्थात सच्चाई	अव्ययीभाव समास
81. शांति है जिसको प्रिय	कर्मधारय समास
82. ग्रंथ को आकार देने वाला	तत्पुरुष समास
83. देश से निर्वासित	अपादान तत्पुरुष समास

6.	**समस्तपद**	**समास का नाम**

1. पाठशाला	संप्रदान तत्पुरुष समास
2. रोगमुक्त	अपादान तत्पुरुष समास
3. पदच्युत	अपादान तत्पुरुष समास
4. जेबघड़ी	संप्रदान तत्पुरुष समास
5. प्रजापति	संबंध तत्पुरुष समास
6. वर्षाऋतु	संबंध तत्पुरुष समास
7. भुखमरा	अपादान तत्पुरुष समास
8. प्रेमातुर	करण तत्पुरुष समास
9. देशनिकाला	अपादान तत्पुरुष समास
10. जन्मांध	अपादान तत्पुरुष समास
11. उद्योगपति	संबंध तत्पुरुष समास
12. प्रसंगानुसार	संबंध तत्पुरुष समास
13. आनंदमग्न	अधिकरण तत्पुरुष समास
14. गृहप्रवेश	अधिकरण तत्पुरुष समास
15. मालगोदाम	संप्रदान तत्पुरुष समास
16. अपठित	नञ् तत्पुरुष समास
17. दयार्द्र	करण तत्पुरुष समास
18. पर्णकुटी	संबंध तत्पुरुष समास
19. गौशाला	संप्रदान तत्पुरुष समास
20. बैलगाड़ी	संबंध तत्पुरुष समास
21. आज्ञानुसार	संबंध तत्पुरुष समास
22. विद्याहीन	अपादान तत्पुरुष समास
23. दशरथपुत्र	संबंध तत्पुरुष समास
24. शरणागत	अधिकरण तत्पुरुष समास
25. राजनीतिज्ञ	संबंध तत्पुरुष समास
26. असफल	नञ् तत्पुरुष समास
27. असंभव	नञ् तत्पुरुष समास
28. रोगमुक्त	अपादान तत्पुरुष समास
29. भलामानुस	कर्मधारय समास
30. अनिच्छा	नञ् तत्पुरुष समास
31. बेखटके	अधिकरण तत्पुरुष समास
32. हर्ष-विषाद	द्वंद्व समास

33. नीलकंठ	कर्मधारय समास
34. नर-नारी	द्वंद्व समास
35. पृथ्वी-आकाश	द्वंद्व समास
36. वेद-पुराण	द्वंद्व समास
37. पंजाब	द्विगु समास
38. कालीमिर्च	कर्मधारय समास
39. लालछड़ी	कर्मधारय समास
40. विद्याधन	कर्मधारय समास
41. चारपाई	द्विगु समास
42. आशालता	कर्मधारय समास
43. अनपढ़	नञ् तत्पुरुष समास
44. सुखप्राप्त	कर्म तत्पुरुष समास
45. कविगोष्ठी	संबंध तत्पुरुष समास
46. यज्ञशाला	संप्रदान तत्पुरुष समास
47. धर्मशाला	संप्रदान तत्पुरुष समास
48. अनुदार	नञ् तत्पुरुष समास
49. राहख़र्च	संप्रदान तत्पुरुष समास
50. मनगढ़ंत	करण तत्पुरुष समास
51. डाकगाड़ी	संप्रदान तत्पुरुष समास
52. कष्टसाध्य	करण तत्पुरुष समास
54. क्रोधाग्नि	कर्मधारय समास
53. चतुर्मुख	द्विगु समास
55. बीचोंबीच	अव्ययीभाव समास
56. अनाथ	नञ् तत्पुरुष समास
57. बाढ़पीड़ित	करण तत्पुरुष समास
58. सुचित्र	कर्मधारय समास
59. महात्मा	कर्मधारय समास
60. नीलगगन	कर्मधारय समास
61. घनश्याम	कर्मधारय समास
62. देशवासी	संबंध तत्पुरुष समास
63. हस्तलिखित	करण तत्पुरुष समास
64. धन-दौलत	द्वंद्व समास

65. राष्ट्रीय-संपत्ति — संबंध तत्पुरुष समास
66. ध्यानमग्न — अधिकरण तत्पुरुष समास
67. नवयुवक — कर्मधारय समास
68. पनचक्की — संबंध तत्पुरुष समास
69. महापुरुष — कर्मधारय समास
70. जिलाध्यक्ष — संबंध तत्पुरुष समास
71. साधारणजन — कर्मधारय समास
72. देहधर्म — संबंध तत्पुरुष समास
73. जनांदोलन — संबंध तत्पुरुष समास
74. नीलकमल — कर्मधारय समास
75. विद्याधन — कर्मधारय समास
76. सीमा-प्रहरी — संबंध तत्पुरुष समास
77. हवनसामग्री — संप्रदान तत्पुरुष समास
78. दहीबड़ा — अधिकरण तत्पुरुष समास
79. तिरंगा — बहुव्रीहि समास
80. पंचतत्व — द्विगु समास
81. चंद्रशेखर — बहुव्रीहि समास
82. नभचर — कर्मधारय समास

7.

द्विगु समास	**बहुव्रीहि समास**
1. चार भुजाओं का समाहार	चार भुजाएँ हैं जिसकी अर्थात विष्णु
2. दश आननों का समाहार	दश आनन हैं जिसके अर्थात रावण
3. पाँच आननों का समाहार	पाँच आनन हैं जिसके अर्थात शिव
4. तीन नेत्रों का समाहार	तीन नेत्र हैं जिसके अर्थात शिव
5. पाँच वटों का समाहार	पाँच वट वृक्ष हैं जहाँ अर्थात विशेष स्थान

8.

1. तुलसीकृत	2. धर्मविमुख	3. व्यायामशाला
4. रोगमुक्त	5. जन्मांध	6. अछूतोद्धार
7. पनचक्की	8. चौराहा	9. हवनसामग्री
10. दहीबड़ा		

9.

1. सत्य के लिए आग्रह	2. घोड़ों की दौड़	3. नीति में निपुण
4. भारत के वासी	5. जल का प्रवाह	6. सूर द्वारा रचित

7. मत का दाता 8. मद में मस्त 9. महान है जो आत्मा
10. देश का भक्त

10. 1. (क) 2. (ख) 3. (घ) 4. (ग) 5. (ख)